7

असाम्प्रदायिक मसीहियतः

फूट को असम्भव बना देती है

मसीहियत हमारे प्रभु यीशु द्वारा संसार को दिए जाने के समय बिल्कुल साम्प्रदायिक नहीं थी। इस तथ्य को शुद्ध मन वाले बाइबल के सभी छात्र मानते हैं। जब तक मसीही लोग पवित्र आत्मा की अगुआई को मानते रहे तब तक वे ''एक चित्त और एक मन'' (प्रेरितों 4:32) होकर साम्प्रदायिक होने के श्राप से मुक्त थे।

उस समय, संसार का प्रत्येक मसीही दूसरे हर मसीही के साथ एक था और फूट की कोई संभावना ही नहीं थी। वे सब एक ही सच्चाई की बात करते थे और एक मन और एक चित्त होकर रहते थे। पति और पत्नियां, पड़ोसी और मित्र सब मिल बैठकर पूरी स्वतन्त्रता और आनन्द से हमारे प्रभु की हर शिक्षा पर चर्चा कर सकते थे। वे हमारे पिता की साझी वेदी पर इकट्ठे होकर परमेश्वर की आराधना कर सकते थे। परमेश्वर के सब लोग प्रभु की मेज के पास इकट्ठे होकर सांकेतिक रूप से अपने प्रभु की देह में भाग ले सकते थे और उसके लहू का प्रतीक दाखरस पी सकते थे। बच्चों के लिए व्याकुल करने वाला यह प्रश्न पूछने की आवश्यकता नहीं थी कि ''हम मां के चर्च में जाएं या पिता के ?'' कलीसिया केवल एक ही थी और घर में माता और पिता के प्रभाव से बच्चों का पालन पोषण केवल मसीही बनने के लिए होता था। कभी किसी ने ''मां की कलीसिया'' या ''पिता की कलीसिया'' नहीं कहा था क्योंकि सारे संसार में केवल एक ही कलीसिया थी और वह कलीसिया परमेश्वर की थी। संसार का हर मसीही इसी कलीसिया का सदस्य था। कभी किसी ने यह नहीं कहा था, ''इस वक्त मैं तुम्हारी कलीसिया में तभी जाऊंगा अगर तुम शाम को मेरे साथ मेरी कलीसिया में चलोगे।'' कोई पति कभी अपनी पत्नी के साथ उसकी कलीसिया में और फिर अपनी कलीसिया में नहीं गया था। ऐसी बात या ऐसा प्रचलन सम्भव ही नहीं था क्योंकि चेले हर जगह एक मन के थे और फूट का सवाल ही नहीं था। कितनी अद्भुत बात थी! ऐसी एकता को दोबारा कौन नहीं देखना चाहेगा ?

विशेष रूप से, हमें इस एकता की इच्छा इसलिए भी करनी चाहिए क्योंकि यह हमारे परमेश्वर की इच्छा है कि वह अपने संतों [पवित्र लोगों] में राज्य करे और हमारे प्रिय प्रभु ने बड़ी गंभीरता से इस एकता के लिए प्रार्थना की थी। क्या कोई सच्चा मसीही इतनी अच्छी बात को जिसके लिए हमारे प्रभु ने बड़े दिल से प्रार्थना की थी और चाहा था कि उसके सब

लोग एक हों, कम गंभीरता से ले सकता है ? परन्तु हम इस ईश्वरीय प्रबन्ध तथा स्थिति की कितनी भी इच्छा करें, जब तक साज़प्रदायिक कलीसियाएं हैं तब तक ऐसा कभी नहीं हो सकता। बुनियादी प्रश्न यह है कि ''ज़्या हम अपने प्रभु की कलीसिया की जगह साज़प्रदायिक कलीसियाओं को प्राथमिकता देते हैं ?'' ज़्या हम उस ईश्वरीय, स्वर्गीय इच्छा से उत्पन्न बालक, मसीहियत को पृथ्वी पर उसके नवजन्म के समय की स्थिति के बजाय वैसे ही रहने देंगे जैसी यह इस समय है ?

मैं मानता हूं कि बहुत से लोग इस प्रामाणिक लेख से सहमत हो रहे हैं और वे इसे मानेंगे भी; तो भी जैसे हमारे उद्धारकर्ज़ा ने प्रार्थना की थी, *सब* चेले या *सब* मसीही एक कैसे हो सकते हैं ? परमेश्वर की पुस्तक में दिए गए काम का अनुसरण करके ही हम एक हो सकते हैं। इस एकता को हमें अपना आदर्श बनाना होगा। यीशु ऊपर से सामर्थ दिए बिना यह काम करने की अनुमति नहीं देगा। यह काम इतना महत्वपूर्ण था कि इसे परमेश्वर के आत्मा की अगुआई के बिना मनुष्य के हाथों में नहीं दिया जा सकता था। इसलिए, उसने प्रेरितों को ऊपर से सामर्थ मिलने तक ''रुककर'' ''बाट जोहने'' की आज्ञा दी थी। जैसे चेले ऊपर से सामर्थ पाए बिना इस काम को पूरा कर सकते थे, वैसे ही हम भी नहीं कर सकते। वास्तव में वे आज हमारे द्वारा किए गए काम से कहीं अच्छा कर सकते थे, ज़्योंकि वे उद्धारकर्ज़ा प्रभु यीशु की पाठशाला में तीन से अधिक वर्ष तक रहे थे। यदि बिना सहायता के कोई इस काम को आगे ले जा सकता है तो वे प्रेरितों के अलावा और कौन हो सकता है। परन्तु प्रभु ने इन लोगों को, विशेष तौर पर जिन्हें उसने स्वयं सिखाया था, बिना स्वर्गीय अगुआई के जाने की अनुमति नहीं दी थी। आज हमारे लिए उसी स्वर्गीय अगुवे की अगुआई में चलना कितना आवश्यक है ! इसलिए हमारी अगुआई करने के लिए उनका किया हुआ काम लिख दिया गया है। हमें परामर्श दिया जाता कि न तो इसमें कुछ जोड़ें और न कुछ निकालें ताकि हम पूरी तरह से वैसे ही उसकी अगुआई में चलें जैसे प्रेरित चलते थे। यदि आज कलीसिया का या धार्मिक काम नये नियम के प्रेरितों के पवित्र आत्मा के द्वारा किए गए काम से मेल नहीं खाता तो वह पवित्र आत्मा के द्वारा दी गई अगुआई में किया गया काम नहीं होगा। उसके विपरीत, आज किया जाने वाला कोई भी काम नये नियम में वर्णित काम से मेल खाता हो तो वह, परमेश्वर के आत्मा की अगुआई में किया गया काम ही है और इसलिए वह साज़प्रदायिक नहीं है। ज़्योंकि आज पवित्र आत्मा की अगुआई में चलने का केवल यही एक ढंग है, इसलिए मैं बार-बार यरूशलेम में होने वाली सभा की समीक्षा करने के महत्व पर ज़ोर देता हूं ताकि हमें ईश्वरीय कार्य अर्थात हमारे नमूने की अच्छी तरह समझ आ जाए।

इसलिए बाइबल से बार-बार समीक्षा करने में बुरा नहीं लगना चाहिए। ज़्योंकि इस समीक्षा से किसी को अनन्त जीवन मिल सकता है। यरूशलेम में विश्वास करने वाले, निरुज़र और निराश मन वाले लोगों को आत्मा ने मन फिराने और अपने पापों की क्षमा के लिए यीशु मसीह के नाम में बपतिस्मा लेने की आज्ञा दी थी। पवित्र आत्मा के काम के ढंग की तरतीब यही है। इन तथ्यों और उनके क्रम से हमें सहमत होना ही पड़ेगा। हमें यह भी

मानना पड़ेगा कि, इस प्रक्रिया में ही कहीं इन उज़ेजित मनों ने अपने पापों की क्षमा में सांत्वना पाई थी। अन्य शब्दों में कहें तो पहले तो उन्होंने पक्का जान लिया था कि परमेश्वर ने यीशु को प्रभु और मसीह बनाया है, और फिर उन्हें मन फिराने और पापों की क्षमा के लिए बपतिस्मा लेने के लिए कहा गया था, और आज्ञा मानने की इस प्रक्रिया में ही कहीं उन्हें क्षमा मिल गई थी।

किंग जेम्स के अनुवाद के अनुसार आत्मा की शिक्षा में, पतरस ने कहा था, ''Be baptized every one of you in the name of Jesus Christ for the remission of sins'' (प्रेरितों 2:38)। प्रश्न यह है कि क्या उनका उद्धार बपतिस्मा लेने से पहले हुआ था या बाद में? सब कुछ इस छोटे से शब्द ''for'' पर निर्भर करता है। हिन्दी में जहां इसका अनुवाद ''के लिए'' होता है, वहीं अंग्रेज़ी में इसके अलग-अलग अर्थ बताए जाते हैं। जो गड़बड़ी का मुख्य कारण बन जाता है। इस कारण इस पर विस्तार से चर्चा करना लाभदायक है। यदि ''for'' शब्द का अर्थ वही लिया जाता है जो ''Son, go to town for the mail'' अर्थात ''बेटा, नगर में जाकर डाक ले आ'' वाक्य में है तो निश्चित रूप से उन्हें बपतिस्मे से पहले उद्धार नहीं मिला था, बल्कि उन्हें पापों की क्षमा पाने के लिए बपतिस्मा लेने की आज्ञा दी गई थी। यदि हम प्रत्येक सद्भावना की समीक्षा करना चाहते हैं, तो हमें यह विचार करना आवश्यक है कि पतरस के संदेश में ''for'' का अर्थ वही हो सकता है जो इन वाक्यों में है या नहीं। [और स्पष्ट करने के लिए अंग्रेज़ी के विभिन्न अनुवाद देखें। ''for'' हमने यहां कोष्ठक में केवल ध्यान दिलाने के लिए दिया है- अनुवादक]

> इस कारण (for) मनुष्य माता-पिता को छोड़कर अपनी पत्नी से मिला रहेगा, और वे दोनों एक तन होंगे (इफिसियों 5:31)।
>
> प्रभु के लिए (for) मनुष्यों के ठहराए हुए हर एक प्रबन्ध के आधीन रहो (1 पतरस 2:13क)।
>
> धन्य हैं वे, जो धर्म के कारण (for) सताए जाते हैं, क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है (मत्ती 5:10क)।

यदि ''for'' शब्द का इस्तेमाल करने में पतरस का अर्थ यही था जो इन आयतों से लगता है, तो पिन्तेकुस्त के दिन पवित्र आत्मा की शिक्षा को मानकर ग्रहण करने वाले का उद्धार बपतिस्मा लेने से पहले ही हो गया था। अन्य शब्दों में, कभी-कभी अंग्रेज़ी भाषा के उपसर्ग ''for'' का अर्थ कभी-कभी पाने ''के लिए'' होता है, परन्तु कहीं पर इसका अर्थ ''इस कारण'' या ''के कारण'' भी होता है। हर गंभीर छात्र तथ्यों को मानने के लिए तैयार है क्योंकि ऐसा करके वह पाता ही है, खोता नहीं। तो फिर पतरस ने ''for'' का इस्तेमाल किस अर्थ में किया? किंग जेम्स वर्ज़न में अनुवादित शब्द ''for'' को इस्तेमाल करने से पतरस का क्या भाव था?

पतरस ने यूनानी भाषा में बात की थी, और यूनानी संस्करण में यह छोटा सा अनुवादित शब्द ''for'' *eis* है। अब इस छोटे से शब्द ''for'' के दो अर्थ हैं जिसमें एक का अर्थ आगे को और दूसरा पीछे की ओर देखना है, तो ''for'' यूनानी शब्द का एक अच्छा अनुवाद हो सकता है। परन्तु यदि यह पता चले कि यूनानी शब्द में ''for'' का केवल एक ही अर्थ है, तो यह एक अच्छा अनुवाद नहीं बल्कि गुमराह करने वाला अनुवाद हो सकता है। जांच करने पर पता चलता है कि अंग्रेज़ी के ''for'' का भूतलक्षी अर्थ यूनानी शब्द में कहीं नहीं मिलता अर्थात यह कभी भी भूतकाल की ओर संकेत नहीं करता। अन्य शब्दों में, *eis* का अर्थ कहीं भी ''इस कारण'' या ''के कारण'' नहीं है। कभी किसी यूनानी ने पतरस द्वारा इस्तेमाल किए गए इस शब्द को भूतलक्षी अर्थ में इस्तेमाल नहीं किया।

अमेरिकी और इंग्लिश दो समितियों द्वारा उस काम को शुरू करने के समय अंत में स्टैंडर्ड रिवाइज्ड वर्ज़न के नाम से प्रसिद्ध हुआ[1] एक प्रतिज्ञा पत्र बनाया गया था। उन्होंने संकल्प लिया था कि वे किंग जेम्स के अनुवाद में केवल वहीं पर कोई परिवर्तन करेंगे जहां मूल यूनानी भाषा के अर्थ को स्पष्ट करने की आवश्यकता होगी। और फिर यदि समिति के दो तिहाई लोग कहें तो वह परिवर्तन किया जाएगा। उन्होंने इसी समझौते के आधार पर काम किया। अनुवाद करते हुए जब वे प्रेरितों 2:38 में ''for'' शब्द पर पहुंचे, तो नए अनुवाद में उन्होंने सभी जगह ''unto'' में बदल दिया अर्थात पतरस को ''Be baptized for'' remission of sins कहता दिखाने के बजाय उन्होंने ''Be baptized unto'' remission कर दिया। ऐसा करके उन्होंने ''for'' का सम्भावित अर्थ ''के कारण'' या ''इस कारण'' कर दिया। ऐसा उन्हें एक सही अनुवाद करने के लिए करना पड़ा क्योंकि अंग्रेज़ी शब्द ''unto'' कभी पीछे की ओर नहीं देखता बल्कि पतरस द्वारा इस्तेमाल किए गए यूनानी शब्द की तरह आगे की ओर ही देखता है।

पतरस का शब्द कहें या पवित्र आत्मा का, *eis* में हमेशा ही एक ऐसा भाव होता है जिससे गति का संकेत या अर्थ मिलता है, और यह गति उसमें शामिल वस्तु को *eis* द्वारा संचालित वस्तु या स्थिति की ओर या ''to'', ''unto'' या ''into'' अर्थात ''में '' जाने का संकेत देती है। क्योंकि यह सत्य है कि पतरस के कहने का अर्थ कभी भी ''इस कारण'' या ''के कारण'' नहीं था बल्कि हमेशा आगे की ओर देखता है, इसलिए इसका अर्थ यही है कि पिन्तेकुस्त के दिन बपतिस्मा लेने वालों को अपने पापों की क्षमा तभी मिली जब उन्होंने बपतिस्मा लिया था, इससे पहले नहीं। यदि उन्हें बपतिस्मा लेने से पहले क्षमा मिल गई होती तो उन्हें क्षमा ''के लिए'' बपतिस्मा लेने की आवश्यकता ही नहीं होनी थी।

पाद टिप्पणी

[1]द अमेरिकन स्टैंडर्ड वर्ज़न।